अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

अनुसंधान में अंतर अनुशासनिक अध्ययन की उपयोगिता

डॉ. अनुपमा छाजेड़
प्राचार्या
श्री उमिया कन्या महाविद्यालय, इन्दौर

सारांश

अंतर अनुशासनिक अध्ययन का तात्पर्य वैसे अध्ययन से है, जिसमें विद्या के एक से अधिक शाखाओं का पारस्परिक प्रभाव और सम्बद्ध विद्या शाखा के नियमों एवं सिद्धांत के आधार पर इस प्रभाव की पहचान की जाती है। इसे समझने के लिए साहित्य और प्रदर्शनकारी कला ज्यादा उपयुक्त होते है, जिसमें सभी विषयों और कलाओं का समाहार हो जाता है। इसलिए स्वाभाविक है कि इन विषयों का अध्ययन इनके मूल सिद्धांतों के अतिरिक्त अन्य विषयों के कोणों से करना अपेक्षित हो जाता है।1

अंतरानुशासनिक अनुसंधान प्राचीन युग से होते आ रहे हैं, जिनके प्रमाण पूर्व और पाश्चात्य–उभयदेशीय संदर्भों में बिखरें पड़े है। किन्तु आधुनिक युग में अंतर–अनुशासनात्मक शोध की विविधमुखी प्रगति दिखाई दे रही है।

अनुसंधान अंग्रेजी भाषा के शब्द त्मेमंतबी का हिन्दी रूपान्तर है। अंग्रेजी भाषा का शब्द दो अलग–अलग शब्दों त्म तथा ै मंतबी से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है पुनः खोज या कुछ नया जानने और मालूम करने संबंधी खोज।2 पी.वी. यंग के अनुसार – अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है, जिसके द्वारा नवीन तथ्यों को खोजने अथवा पुराने तथ्यों की विषयवस्तु, उनकी क्रमबद्धता, अन्तः सम्बन्ध, कार्य–कारण व्याख्या और उनके निहित नैसर्गिक नियमों के पुष्टिकरण का कार्य किया जाता है।

Research may be defined as the systematic method of discovering new facts or verifying the old facts, their sequences, interrelationships, casual explanations and the natural laws which govern them.3 (Young P.V. 1966:15)

अनुसंधान या रिसर्च अनुशासन में रहकर हो तो बेहतर है, परंतु जटिल समस्याओं का हल अनुशासन में रहकर नहीं निकाला जा सकता। अंतर अनुशासनिक अध्ययन अंग्रेजी भाषा के 'इंटरडिसिप्लिनरी स्टडी' का हिन्दी पर्याय है। विद्वानों ने 'डिसिप्लिन' शब्द का सटीक हिन्दी पर्याय 'विद्या' शब्द होने के चलते 'इंटरडिसिप्लिनरी स्टडी' का हिन्दी पर्याय 'अंतरविद्यावर्ती अध्ययन' माना है। डॉ. फादर कामिल बुल्के ने भी अपने अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश में 'डिसिप्लिन' के लिए 'विद्या' शब्द ही दिया है।[4] लेकिन अंतर अनुशासनिक अध्ययन ही 'इंटरडिसिप्लिनरी स्टडी' का हिन्दी पर्याय रूप में चल पड़ा या अधिक अकादमिक अनुशासनों का किसी एक गतिविधि, जैसे शोध परियोजना में संयोजन है। यह विषयों की सीमाओं का अतिक्रांत पर उनसे परे सोचते हुए कुछ नया रचने का उपक्रम है। यह नई उभरती जरूरतों और व्यवसायों के अनुरूप किसी अंतरानुशासनिक क्षेत्र से सम्बद्ध एक ऐसी प्रक्रिया है, जो अकादमिक अनुशासनों या चिंतन के विभिन्न संप्रदायों की पारंपरिक सीमाओं को तोड़ते हुए उसे एक संगठनात्मक इकाई में पर्यवसित करती है। अंतरानुशासनिक अनुसंधान की पद्धति ज्ञान की बुनियादी समझ को विकसित करने या समस्याओं को हल करने के लिए विशेष कारगर रहती है।

अंतरानुशासनिक अनुसंधान दो या दो से अधिक अध्ययन क्षेत्रों या विशेष ज्ञान के निकायों के माध्यम से शोध की एक ऐसी पद्धति है, जहां टीमों या व्यक्तियों द्वारा विविध सूचनाओं, डेटा, तकनीक, उपकरण, दृष्टिकोणों और अवधारणाओं को एकीकृत किया जाता है।[5]

किसी एक अनुशासन में मान्यता प्राप्त द्वारा उस अनुशासन के विद्वानों का समुदाय ज्ञान के क्षेत्र को नियंत्रित करने की इच्छा है जबकि अंतर अनुशासनिक अध्ययन में ज्ञान के नए आयामों के विकास के चलते उस पाठ्यक्रम में परिवर्तन की संभावनाएं बनी रहती है। यह ज्ञान पुरानी बातों को नवीन रूप में उद्घाटित कर हमारी रूढिवादीता, पूर्वाग्रहों को हमसे दूर कर नवीनता को स्थापित करता है।

जे.क्लने और डब्ल्यू. नोवेल के अनुसार, ''किसी प्रश्न का उत्तर खोजने या किसी समस्या के समाधान अथवा किसी ऐसे विषय को लक्ष्य बनाने की प्रक्रिया

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

अंतरानुशासनात्मक अध्ययन है, जहां उस प्रश्न, समस्या या विषय के अत्यधिक व्यापक या जटिल होने के कारण है, किसी एकल अनुशासन या पेशे से उसका समुचित रूप में समाधान नहीं हो पाता है। इसके माध्यम से हम अनुशासनात्मक दृष्टिकोणों को ग्रहण करते है और फिर अपेक्षाकृत कहीं अधिक व्यापक दृष्टिकोण की निर्मिति करते हुए गहरी अंतर्दृष्टि को समाहित करते है।''[6]

टी. क्लेविन लिबरल आर्ट इंस्टीट्यूशन द्वारा प्रकाशित जर्नल के अनुसार, अंतर अनुशासनिक अध्ययन पाठ्यक्रम को तैयार करने और प्रशिक्षण की एक ऐसी विधि है, जिसके तहत फैकल्टी व्यक्तिगत या दल के रूप में विद्यार्थियों की क्षमता को विकसित करने, मुद्दों की समझ व्यापक करने, समस्याओं के समाधान हेतु नए उपागमों के निर्माण तथा समस्या समाधान की दिशा में जो एक अनुशासन या प्रशिक्षण क्षेत्र से बाहर हो, के लिए दो या अधिक अनुशासनों की सूचनाओं, आंकड़ों, तकनीकों, उपकरणों, सिद्धांतों की पहचान का मूल्यांकन करती है।

अतः हम कह सकते है कि, अंतर अनुशासनिक शोध, किसी शोध समूह द्वारा या दो या दो से अधिक अनुशासनों के माध्यम से समस्याओं का समाधान का सुगम रास्ता है। अंतर अनुशासनिक अध्ययन आधुनिक युग की आवश्यकता है, इसका कारण यह है कि ज्ञान अखंड भले ही हो, लेकिन उसकी प्राप्ति और प्रतीति के मार्ग अलग–अलग होते है। ये मार्ग ही विभिन्न विधाओं के रूप में जाने जाते है। प्राचीन काल में ज्ञान को ब्रह्म के समान समग्र एवं अखंड माना जाता था और उसका स्वरूप संश्लिष्ट था। वेद इसका प्रमाण है। ज्ञान का विभाजन दर्शन, विज्ञान, आदि संकायों में नहीं किया जाता था। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में राजनीतिक और सामाजिक पहलुओं का ज्ञान एक साथ ही मिलता है। गैलीलियों से पहले दर्शन और विज्ञान को एक ही समझा जाता था।[7]

अंतर अनुशासन को समझने के लिए हमें ज्ञानानुशासन उसके वर्तमान में प्रचलित अनुशासनों के मुख्य विषय आदि को समझना आवश्यक है।

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

ज्ञानानुशासन किसे कहते है ?

1. शोध और अंतरदृष्टि को साझा करने का समान मंच है।
2. रोजगार की संभावना की मार्ग प्रशस्त करता है।
3. अध्ययन के लिए निश्चित प्रविधि एवं विषय सामग्री है।
4. उसमें विकसित और निश्चित केन्द्रीय अवधारणाएं सिद्धांत हो।
5. उसके अंदर जांच करने की निश्चित शोध पद्धति हो।[8]

वर्तमान में अनुशासन को तीन भागों में बांटा गया है –

1. विज्ञान – इसमें विज्ञान के समस्त विषय आ जाते है। प्रौद्योगिकी, रसायन, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भू–गर्भ विज्ञान, ब्रह्मांड विज्ञान।
2. सामाजित विज्ञान – इसमें मनोविज्ञान विधि, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, आदि आते है।
3. मानविकी – इसमें मनुष्य के अनुभव उपलब्धियों के बारे में बताया जाता है। इसमें कला, साहित्य, इतिहास, दर्शन, धर्म, नाटक, संगीत, आदि आते है।

उक्त आधारों पर अनुशासन का निर्माण हुआ है। प्रारम्भ में एक या दो ही थे, परंतु आज अनेक अनुशासन क्रियान्वित है।

स्थापित अनुशासन एवं अंतर–अनुशासनिक अध्ययन के मध्य तुलना

स्थापित अनुशासन	अंतर–अनुशासन
किसी निश्चित विषय में ज्ञान का अंश/भाग होने का वदाा करता है।	विषयों के समन्वय से निर्मित ज्ञान तथा उस ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया का, जो विषयों से आगे बढे हुए है का वदा
ज्ञान प्राप्त करने की विधि तथा उस ज्ञान को अनुशासित करने के सिद्धांत का वदा	अनुशासन की प्रविधि का प्रयोग परन्तु साथ ही अंतर–अनुशासन में ज्ञान प्राप्त करने की स्वयं की विधि का वदाा
अपने अनुशासनिक क्षेत्र से सम्बन्धित	संज्ञानात्मक प्रगति, विस्तृत समझ, नये अर्थ

वअधारण यें, ज्ञान, सिद्धांत के सृजन की ओर अग्रसरित	के साथ नये ज्ञान का सृजन
मान्यता प्राप्त कोर्स, मूल (core) तथा पाठ्यक्रम से संपन्न	अस्पष्टता या अंतर–अनुशासनिक विषय के पाठ्यक्रम बनने की शुरूआत
विषय विशेषज्ञों का अपना समुदाय	विषय विशेषज्ञों के समुदाय के बनने की प्रक्रिया
यह स्वयं नियंत्रित होते हैं तथा अपने ज्ञान क्षेत्र को स्वयं नियंत्रित करने की इच्छा भी रखते है।	यह श्रोत सामाग्री के लिए बहुतायत में दूसरे अनुशासनों पर निर्भर होते है।
अपने अनुशासन में अलग–अलग पाठ्यक्रमों जैसे बी.ए., एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी. के माध्यम से भविष्य के लिए विषय विशेषज्ञों को तैयार किया गया है तथा प्रक्रिया जारी है।[9]	अंतर–अनुशासनिक अध्ययन में विशेषज्ञों को तैयार करने की शुरूआत है।

अंतर–अनुशासनिक अध्ययन के कार्य

- ज्ञान का एकीकरण करना
- अंतर–विरोधों की पहचान एवं उसका निराकरण करना
- समस्या का सम्पूर्णता में अध्ययन
- सामान्यीकरण करना
- समंत्रयीकरण
    - पूर्व समन्वय
    - आंशिक समन्वय

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

अंतर–अनुशासनिक अध्ययन का वर्गीकरण

अंतर–अनुशासनिक अध्ययन के प्रकारों के बारे में विभिन्न विद्वानों में मतभेद है। परन्तु मुख्य रूप से इसे निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है –

- इंट्रा–डिसिप्लिन अध्ययन
- इंटर–डिसिप्लिन अध्ययन
- मल्टी–डिसिप्लिन अध्ययन
- क्रॉस–डिसिप्लिन अध्ययन
- ट्रांस–डिसिप्लिन अध्ययन

इंट्रा–डिसिप्लिन अध्ययन –

किसी भी एक अनुशासन विशेष के ही किसी क्षेत्र की अवधारणाओं, सिद्धांतों एवं प्रविधियों का समन्वय कर किसी समस्या का हल प्राप्त करना ही इंट्रा–डिसिप्लिन अध्ययन कहलाता है।

इंटर–डिसिप्लिन अध्ययन –

किसी भी मुद्दे को दो या दो से अधिक अनुशासनिक परिप्रेक्षों के समाकलन द्वारा एक विश्लेषणात्मक रूपरेखा का निर्माण करना ही इंटर डिसिप्लिन अध्ययन कहलाता है।

मल्टी–डिसिप्लिन अध्ययन –

किसी एक घटना को अलग–अलग लोग अपने–अपने ज्ञानानुशासन परम्परा की विधियों से देखकर उस घटना पर अपने अपने विवेचन को प्रस्तुत कर समस्या का हल निकालते है, तो उसे मल्टी डिसिप्लिन अध्ययन कहेंगे।

क्रॉस–डिसिप्लिन अध्ययन –

जब दो विविध अनुशासन वाले आपस में एक–दूसरे के विषयों या परिणामों की जांच कर अपना विवेचन प्रस्तुत करते है, तो उसे क्रॉस डिसिप्लिन अध्ययन कहेंगे। उदाहरण– धार्मिक रूप से जैन धर्म को विज्ञान के द्वारा वैध बताना।

ट्रांस–डिसिप्लिन अध्ययन –

जब विभिन्न अनुशासनों के समन्वय से समस्या का समाधान नहीं होता है, उस परिस्थिति में इस विधि का प्रयोग किया जाता है। जब दो या दो से अधिक अनुशासन आपस में समन्वय कर एक नए विषय ढांचे का निर्माण करके समस्या का समाधान करते है, तो ऐसी विधि को ट्रांस–डिसिप्लिन अध्ययन विधि कहते है। तात्कालिक समस्याओं का हल करने में यह मददगार साबित होता है।

अंतर अनुशासनिक अध्ययन की उपयोगिता

'द नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्स, इंजीनियरिंग एंड मेडिसीन' से प्रकाशित रिसर्च जर्नल में कहा गया है। ''अंतर अनुशासनिक शोध, किसी शोध दल या व्यक्तिगत स्तर पर किए जाने वाले शोध की वह पद्धति है जिसमें दो या दो से अधिक अनुशासनों या किसी विशेष ज्ञान के भागों या अंशों के आधारभूत समझ को विकसित करने के लिए या समस्याओं के समाधान के लिए जिनका समाधान किसी एक अनुशासन के शोध अभ्यास से परे है, से संबंधित सूचनाओं, आंकड़ों, तकनीकों, उपकरणों, परिप्रेक्ष्यों, अवधारणाओं को समन्वित किया जाता है।''

अंतर अनुशासनिक अध्ययन रचना का परिपूर्णता और ओजस्वी होने की संभावना को कई गुना बढा देता है। ऐसी नहीं है कि इस अध्ययन पद्धति की खामियां नहीं है। सबसे बड़ी खामी है, अंतर अनुशासनिक अध्ययन को बढ़ावा मिलने से किसी भी अनुशासन की मूल सिद्धांतों का विकास बाधित होता है। लेकिन हानि की अपेक्षा लाभ अधिक होने से यह कहना कतई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भविष्य अंतर अनुशासनिक अध्ययन का ही है।

अंतर अनुशासन ही समाज में रूढिवादिता को दूर कर समाज देश को उन्नति के शिखर पर ले जाएंगे।

क्लाइन एवं नेवले (1997) के अनुसार, ''अंतर–अनुशासनिक अध्ययन प्रश्नों के उत्तर देने की एक प्रणाली है या बहुत जटिल व विस्तृत विषय को संबोधित करने की एक शैली है जो एक अनुशासन के द्वारा पूर्ण रूप से संबोधित नहीं हो पाते है और विषय के परिप्रेक्ष तथा अंतर दृष्टि को समन्वित कर व्यापक परिप्रेक्ष की रचना के लिए आवश्यक होता है।''

अंतर अनुशासन पाठ्यक्रम से प्रारम्भ हो कला, मानविकी, धार्मिक, विज्ञान, भौतिकी समस्त क्षेत्रों में कार्य कर इनकी समस्याओं का समाधान पाने में सफल एवं कारगर सिद्ध होगी। समाज और प्रकृति की जटिलता, रोज नई–नई सामाजिक समस्याओं का समाधान, अपनी एवं नवीन पीढ़ी की जिज्ञासाओं, समस्याओं का हल नवीन तरीके से प्राप्त करने, देश की समस्याओं को विभिन्न सोच के लोगों के नवीन रूप से हल करना आदि अंत अनुशासनिक अनुसंधान का महत्व होगा। अंततः इस खोज को बढ़ावा देना समाज के हित में ही होगा।

पी.वी. यंग ने ॆबपमदजपबि ॆवबपंस ॆनतअमल ंदक त्मेमंतबी में लिखा है – वैज्ञानिक विवेचना ही यह धारणा है कि कि संग्रहित तथ्यों से कही ज्यादा भेद खोलने व महत्वपूर्ण वाली बातें ओर कुछ भी है, यदि सुव्यवस्थित तथ्यों को समस्त अध्ययन से जोड़ा जाए तो उनका एक विशिष्ट सामान्य अर्थ प्रस्तुत हो सकता है, जिसके माध्यम से प्रामाणिक व्याख्याएं निकाली जा सकती है।[10]

फ्रांसीसी गणितज्ञ प्वयेनकेयर (च्वपदबंतम) ने लिखा है कि, जिस तरह एक मकान पत्थरों से निर्मित होता है, उसी तरह विज्ञान का निर्माण तथ्यों से होता है, लेकिन मात्र तथ्यों का एक संग्रहण उसी तरह विज्ञान नहीं है, जैसा पत्थरों का एक ढेर मकान नहीं है।[11]

निष्कर्ष

उपरोक्त परिभिाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि किसी एक व्यक्ति के द्वारा किसी भी विशेष अनुशासन में रहकर किया गया अध्ययन पूर्ण नहीं हो पाता है। अलग–अलग अनुशासन के व्यक्ति अलग–अलग परिस्थितियों शिक्षा, स्वभाव, समाज, धर्म, संस्कृति, राष्ट्र एवं अलग–अलग पर्यावरण आदि से सुसज्जित होते है। अतः उनकी सोच, अवधारणाएं, सिद्धांत, अतदृष्टि सामग्री आदि अलग–अलग होती है। अतः परिणाम भी अलग–अलग होते है और सभी का संयोजन ही पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। अतः अंतरअनुशासनिक अध्ययन महत्वपूर्ण एवं पूर्णता को प्रदान करने वाला है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्रं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	http://mohanstudy.blogspot.com काव्येषु नाटकं रम्यं.... शनिवार 7 मई 2016	
2.	व्यवहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियां – एस.के. मंगल	2
3.	वहीं	3
4.	शोध प्रविधि – डॉ. वर्मा ''हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला''	103
5.	अप्रैल 2015 – अक्षरवार्ता Editorial	
6.	http://mohanstudy.blogspot.com काव्येषु नाटकं रम्यं.... शनिवार 7 मई 2016	
7.	अप्रैल 2015 – अक्षरवार्ता Editorial	
8.	एडवांसिंग इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज़	393
9.	www.academia.edu अंतर अनुशासनिक अध्ययन – महेश के. तिवारी	
10.	शोध प्रविधि – डॉ. एच.एन. सिंह	281
11.	वहीं	281